7

अनन्त जीवन का आश्वासन

क्या आप कभी इस बात से परेशान हुए हैं कि आप को किसी बात का पता नहीं था? बीमार होने की सबसे बुरी बात डॉक्टर द्वारा इलाज आरम्भ करने से पहले यह पता न चलना है कि रोग क्या है। क्या आप ने, यह जानते हुए कि आप कहां जाना चाहते हैं पर यह पता न होने पर कि वहां जाना कैसे अपने आप को कभी मार्ग पर पाया है? स्कूल में परीक्षा देने के समय क्या आप परेशान नहीं होते, जब आप को उत्तर पता न हों?

इसी प्रकार से यह पक्का न होने पर कि सच क्या है, कोई धार्मिक मामलों में परेशान हो सकता है। यूहन्ना ने 1 यूहन्ना उन मसीही लोगों के नाम लिखा जो संदेह कर कर रहे थे, यानी जिन्हें पक्का यकीन नहीं था कि जो बातें उन्हें सिखाई गई हैं वे सही हैं भी या नहीं। एक अर्थ में उसका संदेश था कि ''तुम जान सकते हो! तुम जान सकते हो कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है! तुम जान सकते हो कि तुम पाप के ऊपर विजय पा सकते हो!''

''निश्चितताओं के इस स्वर मिलन'' के चरम तक पहुंचने पर हम पुस्तक के अन्तिम अध्याय में पढ़ते हैं, ''मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; *कि तुम जानो,* कि अनन्त जीवन तुम्हारा है'' (1 यूहन्ना 5:13)।[1] ''अनन्त जीवन का आश्वासन'' एक निश्चितता थी! यूहन्ना के पाठकों को इस संदेश की आवश्यकता थी और हमें भी है।

समस्या

समस्या तब

जिन लोगों को यूहन्ना ने लिखा उन्हें स्वर्ग में अपने प्रतिफल के प्रति आश्वस्त होने की आवश्यकता थी। क्योंकि उन्हें झूठे गुरुओं द्वारा उलझन में डाल दिया गया था, जो स्पष्टतया वही मानते थे, जो बाद में अध्यात्मिक ज्ञानी मानने लगे थे। ये पाखण्डी ''ज्ञानी'' होने का अर्थात, विशेष ज्ञान रखने वाले मसीही होने का दावा करते थे। उनके अनुसार उनका यह विशेष ज्ञान यह था कि मसीह वास्तव में मनुष्य नहीं बना था और स्पष्टतया, किसी के पाप में बने रहने से परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध में फर्क नहीं पड़ेगा।

श्रेष्ठ व्यवहार तथा विशेष ज्ञान होने की बात ने उन मसीही लोगों को जिनके नाम यूहन्ना ने यह पत्री लिखी, अपने आप को उनसे कम बना दिया होगा। वे हैरान थे, ''क्या जो हमें बताया गया है, वह सच है?''; ''हमें सच्च कैसे पता चल सकता है?'' उन्हें जानने की आवश्यकता थी कि यह कैसे पता लगाया जा सकता है कि सिखाने वाले लोग परमेश्वर की ओर थे और यीशु के विषय में उन्हें जो कुछ बताया जा रहा है वह सत्य है। वे यही आश्वासन चाहते थे कि वे स्वर्ग में जाएंगे। यूहन्ना ने इन्हीं बातों का देने के लिए लिखा।

समस्या अब

जिस प्रकार झूठे शिक्षकों द्वारा उस समय के मसीही लोगों को अपने विश्वास के सम्बन्ध में भ्रम में डाल दिया था, वैसे ही आज के मसीही लोगों की समस्याएं हो सकती हैं। हम ऐसे संसार में रहते हैं, जो विज्ञान और कारण की पूजा करता है। कई बार तो लगता है कि हर समझदार और पढ़ा-लिखा व्यक्ति हमें बता रहा है कि हम परमेश्वर पर या यीशु में विश्वास नहीं ला सकते और फिर भी समझदार आधुनिक लोग बहला सकते हैं। इस कारण हम चकित हो सकते हैं ''हम कैसे जान सकते हैं कि जो हम विश्वास करते हैं, वह सही है?''

फिर भी हम में से अधिकतर के लिए शायद इससे भी उपयुक्त यह है कि ''हम अनन्त जीवन के बारे में वैसे सुनिश्चित हो सकते हैं?'' हमने सही प्रचार किया है कि मसीही व्यक्ति के अनुग्रह से गिर कर अनन्त काल के लिए खोने की सम्भावना है।[2] वास्तव में हमने यह संदेश इतना जोरदार ढंग से दिया हो सकता है कि हमारे कई सदस्यों को अपने अनन्त उद्धार के लिए बेचैनी होने लगती है। यूहन्ना ने कहा, ''हम जवाब में कहेंगे, सचमुच? तुम्हें पक्का यकीन है?''

समाधान

उस समय की अनिश्चितता की समस्या का समाधान क्या था? वही समाधान आज की हमारी समस्या का समधान होगा।

आप जान सकते हैं

उस समय का समाधान। अनिश्चितता की समस्या के लिए यूहन्ना का समाधान यह ज़ोर देना था कि उसके पाठकों को किसी बात का पता था यानी यह उनका अनुमान या इच्छा नहीं थी कि काश! यह सही हो, बल्कि वे *जानते* थे कि यह सही है। उन कार्मिक निश्चितताओं में हम जिन्हें जान सकते हैं निम्न हैं:

2:3-हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर को जानते हैं। (देखें 2:13, 14; 4:7, 8.)

2:5-हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर में हैं।

2:21; 4:2, 6-हम सच्चाई को जान सकते हैं और उसे झूठ से अलग कर सकते हैं।

3:1-हम जान सकते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं।[3]

3:2-हम जान सकते हैं कि जब वह प्रकट होगा तो ''हम उसके समान होंगे।''

3:5-हम जान सकते हैं कि ''वह इसलिए प्रकट हुआ कि पापों को हर ले जाए।''

3:14-हम जान सकते हैं कि ''हम मृत्यु से होकर जीवन में पहुंचे हैं।''

3:15-हम जान सकते हैं कि ''उसने हमारे लिए प्राण दे दिए।''

3:24-हम जान सकते हैं कि ''हमें आत्मा दिया गया है।'' (4:13 भी देखें.)

4:13-हम जान सकते हैं कि ''हम परमेश्वर में हैं और पिता के साथ हमारी संगति है'' (5:19 भी देखें)।

4:16-हम जान सकते है कि ''जो परमेश्वर हमसे प्रेम रखता है'' यानी सह कि परमेश्वर हमसे प्रेम रखता है!

5:13-हम जान सकते हैं कि अनन्त जीवन हमारा है।

5:14, 15–हम जान सकते हैं कि हमारी प्रार्थनाएं सुनी गई हैं।

5:20–हम जान सकते हैं कि ''परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें।''

यूहन्ना ने ज़ोर दिया कि झूठे शिक्षक अर्थात ''धोखा देने वाले'' अर्थात ''मसीही विरोधी'' उसके पाठकों के ज्ञान को बढ़ा नहीं सकते। इन भाइयों को सच्चाई पहले ही मालूम थी और उन्हें इसका ''प्रयोजन नहीं कि कोई [ओं] सिखाए'' (1 यूहन्ना 2:20, 27)। इसलिए यूहन्ना ''ज्ञानी'' अध्यात्म ज्ञानियों को नहीं, बल्कि मसीही लोगों को कह रहा था। वे उनसे अधिक जानते थे, जो समझते थे कि उन्हें ज्ञान हैं! उन्हें सच्चाई मालूम थी; इसलिए वे झूठे शिक्षकों से कह सकते थे और उन्हें कहा जाना चाहिए था कि ''हमें मालूम है कि हम क्या विश्वास करते हैं और हमें मालूम है कि यह सही है, से हमें तुम्हारी बात सुनने की आवश्यकता नहीं है, निकल जाओ!''

हो सकता है कि आप को वही समस्या न हो जो यूहन्ना के पाठकों के सामने थी। यह संदेह करने वाला कि यीशु मसीह सचमुच में देहधारी हुआ, शायद हमारी सभाओं में न बोले। तौ भी हमें वैसी ही ताड़ना की आवश्यकता है, जिसकी यूहन्ना के पाठकों को थी। कई प्रचारक यह दावा करते हुए कि उन्हें कोई गहरी सच्चाई मिली है, जिसका पहले किसी को पता नहीं चला, नया प्रकाशन लगने वाली कोई चीज़ लेकर आते हैं। तब और यदि ऐसा हो, तो उसका ध्यान रखा जाना चाहिए, जो हमें पता है! परमेश्वर के वचन में स्पष्टतया प्रकट की गई सच्चाई आज भी सच है! यह देखने के लिए कि उसका प्रचार लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रकट की गई सच्चाई से मेल खाता है या नहीं, हमें चाहिए हर शिक्षक को परखें और किसी प्रकार के विशेष ज्ञान होने का दावा करने वाले शिक्षकों की बातों से सच से फिर न जाएं।

समाधान अब। जो ज्ञान आज के मसीही लोगों को दुविधा में डालेगा यह वहीं ज्ञान है, जिसकी बात यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 5:13 में की: ''मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।'' क्या हम सचमुच जान सकते हैं कि अनन्त जीवन हमारा है।

इस आयत का दुरुपयोग उन लोगों द्वारा हुआ है, जो विश्वास त्याग की बात असम्भावित मानते हैं। उनका कहना है कि यूहन्ना अब यानी वर्तमान में हमारे पास अनन्त जीवन होने की बात कर रहा था। यदि हमारे पास वह जीवन है और यह अनन्त है जो उनका कहना है कि फिर इसे खो कैसे सकते हैं?

कुछ लोग एक अर्थ में इस आयत की शिक्षा से इनकार कर सकते हैं। उनका दावा है कि हमें सचमुच पता नहीं चल सकता कि हमारे पास अब अनन्त जीवन है। उस विचार के अनुसार हम अपने *उद्धार* को खो सकते हैं, इसलिए स्वर्ग में हमारा घर खतरे में रहता है और हम तभी जान सकते हैं कि स्वर्ग में हमारा घर जब हम इन अच्छे शब्दों को सुनते हैं, ''शाबाश, हे अच्छे और विश्वास करने वाले विश्वासयोग्य सेवक।'' इन लोगों के लिए हमारे अनन्त जीवन की अनिश्चितता जीवन का तथ्य है। वे इस अनिश्चितता को उस प्रेरणा के रूप में मानते हैं, जो मसीही लोगों को विश्वास योग्य बने रहने में सहायता करते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हम

पाप करेंगे तो हम नरक की ओर ही जा रहे हैं, जब तक मन फिराकर हम अपने पाप को मान नहीं लेते।

इनमें से कोई भी व्याख्या सही नहीं है। एक ओर तो नया नियम सिखाता है हम अपने उद्धार को खो सकते हैं; इसलिए हम अनन्त जीवन को खो सकते हैं। इस वचन में ''अनन्त जीवन'' मसीह से जुड़े जीवन के गुण को कहा गया है, जो इस जीवन से अलग होने पर अमर जीवन बन जाता है।[4] यदि हम मसीह से अलग होते हैं तो हम उस अनन्त जीवन पर अपनी पकड़ को ढीली कर देते हैं और इसे अनन्तकाल तक पाने की हमें आशा नहीं है।

दूसरी ओर, मसीही होने के नाते हमें यह आश्वासन होना चाहिए कि यहां रहते हुए भी हमारे पास मसीह के साथ, एक प्रकार का जीवन है, जो उस जीवन से अलग है, जिसे दूसरे लोग अनुभव करते हैं। इसके अलावा हम इस आश्वासन को महसूस कर रह सकते हैं कि इस पृथ्वी से चले जाने के बाद हम उस अनन्त जीवन को भोगते रहेंगे। रात को सोने के लिए जाने पर हमें चकित होने की आवश्यकता नहीं है कि परमेश्वर के अनुग्रह से हमारा उद्धार हुआ है या नहीं। सुबह उठकर हमें यह पूछने की आवश्यकता नही है। यदि हम आज मर जाते हैं तो क्या हम स्वर्ग में जाएंगे या नहीं। हम जान सकते हैं कि हमारा उद्धार हो गया है, यानी हमारा उद्धार हो रहा है और हमारा उद्धार होगा! यूहन्ना 1 यूहन्ना 5:13 की सच्चाई हमारे मनों में छिप जानी चाहिए: ''मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।'' हम जान सकते हैं कि हमारे पास अनन्त जीवन है!

कौन जान सकता/सकती है?

परन्तु कुछ और कहना आवश्यक है। हमने पढ़ा है, ''... तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हरा है।'' इस वाक्य में ''तुम'' कौन है? कौन जान सकता या सकती है कि उसके पास अनन्त जीवन है? बहुत हद तक , 1 यूहन्ना इसी प्रश्न के बारे में है। यूहन्ना अपने पाठकों को उन सभी आशिषों के बारे में बताना चाहता है जो मसीह में उनको मिली थी, पर उसने यह भी ज़ोर दिया कि वह चाहता है कि उनका जीवन उसी के अनुसार हो। पत्री के पांचवें अध्याय में यूहन्ना ने उनके बारे में लिखा, जिन्हें अनन्त जीवन का आश्वासन है। 1 यूहन्ना 5 पढ़ें:

> [1]जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करने वाले से प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है, जो उससे उत्पन्न हुआ है। [2]जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। [3]और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं। [4]क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।
>
> [5]संसार पर जय पाने वाला कौन है? केवल वह जिसका यह विश्वास है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। [6]यही है वह, जो पानी और लोहू के द्वारा आया था; अर्थात यीशु मसीह वह न केवल पानी के द्वारा, बरन पानी और लोहू दोनों के द्वारा आया था। [7]और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है। [8]और गवाही देने वाले तीन हैं;

आत्मा, और पानी, और लोहू; और तीनों एक ही बात पर सहमत हैं, [9]जब हम मनुष्यों
की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो उससे बढ़कर है; और परमेश्वर की
गवाही यह है, कि उसने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है। [10]जो परमेश्वर के पुत्र पर
विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिसने परमेश्वर की प्रतीति नहीं की,
उसने उसे झूठा ठहराया; क्योंकि उसने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर
ने अपने पुत्र के विषय में दी है। [11]और यह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त
जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है। [12]जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन
है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पस जीवन भी नहीं है।

[13]मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है;
कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। [14]और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है,
वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।
[15]और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते
हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है।

[16]यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिसका फल मृत्यु न हो, तो बिनती
करे, और परमेश्वर, उसे, उनके लिए, जिन्होंने ऐसा पाप किया है जिसका फल मृत्यु न
हो, जीवन देगा: पाप ऐसा भी होता है, जिसका फल मृत्यु है: इसके विषय में मैं बिनती
करने के लिए नहीं कहता। [17]सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है,
जिसका फल मृत्यु नहीं।

[18]हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; पर
जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।
[19]हम जानते हैं कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है। [20]और
यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम
उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते
हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

[21]हे बालको, अपने आप को मूरतों से बचाए रखो।

इस वचन का कुछ भाग (आयतें 6-11) यूहन्ना के पाठकों को यीशु के ईश्वरीय होने के गवाहों को याद दिलाने के लिए लिखा गया। इसका कुछ भाग (आयतें 14-17) उत्तर मिली प्रार्थना की प्रतिज्ञा देता है। अन्तिम कुछ आयतें (आयतें 18-21) पुस्तक के संक्षिप्त कथन का काम करती प्रतीत होती हैं।[5] परन्तु पूरे अध्याय में, हमें पता चला है कि अनन्त जीवन का आश्वासन किसके पास है।

(1) *अनन्त जीवन का आश्वासन उन लोगों को है, जो ''परमेश्वर की सन्तान'' हैं* (5:1, 4)। यूहन्ना मसीही लोगों को अर्थात उन लोगों को लिखा गया था जो मसीही बन गए थे, यानी जिन्होंने नए सिरे से जन्म लिया था। जो लोग मसीही नहीं हैं, अर्थात जिन्होंने नया जन्म नहीं लिया है, उन्हें अनन्त आश्वासन नहीं है।

(2) *अनन्त जीवन का आश्वासन उन लोगों को है, जो विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह*

(1 यूहन्ना 5:1), *परमेश्वर का पुत्र* (1 यूहन्ना 5:5, 9, 10, 11, 12, 13,[6] 20)[7] *है।* यूहन्ना के समय में रहने वाले लोगों के लिए ऐसी शिक्षा (डॉक्ट्रिन) का अर्थ था कि जिन्होंने झूठे शिक्षकों की बात को माना, वे अनन्त जीवन नहीं पाएंगे। आज जो लोग यीशु को नकारते हैं और उसमें विश्वास नहीं लाते हैं, उन्हें अनन्त जीवन का कोई आश्वासन नहीं है।

(3) *अनन्त जीवन का आश्वासन उन लोगों को है, जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं* (5:2, 3)। मसीही लोगों के लिए परमेश्वर से प्रेम रखना, परमेश्वर की सन्तान से प्रेम रखना और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना आवश्यक है। जो लोग परमेश्वर से प्रेम नहीं करते, न तो वे परमेश्वर की बात मानेंगे और न परमेश्वर के लोगों से प्रेम करेंगे; इसलिए उन्हें अनन्त जीवन का कोई आश्वासन नहीं है।

(4) *अनन्त जीवन का आश्वासन उन लोगों को है, जो परमेश्वर की सन्तान से प्रेम रखते हैं* (5:1)। हम यह दावा नहीं करते हैं, जिसे हमने कभी देखा नहीं, यदि हम उसकी सन्तान को जिसे हम देख सकते हैं, प्रेम नहीं कर सकते (1 यूहन्ना 4:20)। वास्तव में यूहन्ना ने कहा कि यदि हम भाइयों से ''करम और सत्य के द्वारा'' प्रेम करें, तो हम जान सकते हैं कि हम ''सत्य के हैं'' और हमारे मन आश्वास्त होंगे (1 यूहन्ना 3:18, 19)। परन्तु ''हमारा मन जिस भी बात से हमें दोषी ठहराता है'' चाहे वह निराश होकर अपने उद्धार पर चकित होने लगता है, ''परमेश्वर हमारे से बड़ा है, और सब कुछ जानता है'' (3:20)। मलिनता और ठुकराने की भावनाएं यह साबित नहीं करती हैं कि हमने अनन्त जीवन का आश्वासन खो दिया। यदि हम उसकी इच्छा पूरी करने के लिए पूरा यत्न लगाते हैं तो परमेश्वर को मालूम है कि हमारा उद्धार तब हो गया, जब हमें उस पर संदेह होता है!

(5) *अनन्त जीवन का आश्वासन उन्हें मिला है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं* (1 यूहन्ना 5:2, 3), हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने से इनकार करके उससे प्रेम का दावा सही नहीं कर सकते (देखें यूहन्ना 14:15)। यूहन्ना ने यह तसल्ली की बात जोड़ दी: ''उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं'' (5:3ख)। परमेश्वर हमसे ऐसा कुछ करने को नहीं कहता जो हमारे लिए बुरा हो, न वह हमसे कुछ ऐसा करने को कहता है, जो हमारे लिए बहुत कठिन हो। यदि हम अपने आप को पूरी तरह से दे दें तो हम पाएंगे कि ''उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं हैं।'' इसके विपरीत उसकी इच्छा पूरी करने से हमें आनन्द आएगा।

हमें कौन सी आज्ञाओं को मानना आवश्यक है? हमारा उद्धार ''केवल विश्वास'' से नहीं होता, बल्कि विश्वास से परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से हमारा उद्धार होता है। इस कारण हम हर उस आज्ञा के मानने के लिए जो हम से जुड़ी हों, पूरी कोशिश करेंगे।

(6) अनन्त जीवन का आश्वासन उन लोगों को है, जो पाप करना जारी नहीं रखते (1 यूहन्ना 5:18)। यूहन्ना ने यह नहीं कहा कि मसीही लोग पाप नहीं करते (1 यूहन्ना 1:7-10) पर उसने यह अवश्य कहा कि मसीही लोग पाप करने के आदी नहीं हैं यानी वे लोग, जिन्हें पाप करते रहना पसन्द नहीं है। विश्वासी मसीही जीवन धार्मिकता वाला जीवन होता है। ऐसा नहीं है कि वह ठोकर खाकर कभी गिरे ही न, पर वह पापपूर्ण जीवन व्यतीत करने को अपनी आदत नहीं बनाता या बनाती। इसका अर्थ यह है कि खुलेआम और विद्रोही होकर पाप में रहने वाले मसीही को 1 यूहन्ना 5:13 से शान्ति नहीं मिल सकती यानी वह अनन्त जीवन का

आश्वासन पाने वाले लोगों में नहीं है।

(7) *अनन्त जीवन का आश्वासन उन लोगों को है, जिनकी प्रार्थनाएं सुनी जाती हैं।* यह तथ्य पहले दी गई, विशेषताओं से अलग है, तौ भी यूहन्ना ने इसे 1 यूहन्ना 5 में शामिल करना सही समझा। उसकी पुष्ठि पुन: आश्वस्त करने वाली है:

> और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और जब हम जानते हैं कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है (1 यूहन्ना 5:14, 15)।

हमें यह मानना होगा कि परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनेगा और उसका उत्तर देगा।[8] इसके साथ ही हमें यह भी याद रखना होगा कि परमेश्वर हमारी सुनता है, ''यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं।'' हमें प्रार्थना हमेशा वैसे ही करनी चाहिए जैसे यीशु ने की कि ''तेरी इच्छा पूरी हो'' (मत्ती 26:42, देखें 6:10)।

उत्तर मिली प्रार्थना के सम्बन्ध में यूहन्ना उन लोगों के लिए प्रार्थना की बात कर रहा था, जो पाप करते हैं। हम आश्वस्त हैं कि अपने भाइयों के लिए जो पाप करते हैं, हमारी प्रार्थनाएं प्रभावकारी हैं (याकूब 5:16)। किसी और जगह मसीही लोगों को निर्देश हैं, ''इसलिए तुम आपस में एक-दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो; और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'' (याकूब 5:16)।

परन्तु यूहन्ना ने कहा कि हमें उनके लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं है जो ''मृत्यु के योग्य'' पाप करते हैं, यानी ऐसा पाप जिसके लिए मन की कठोरता के कारण कोई भाई या बहन मन नहीं फिराएगा। उसने हमें ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना न करने की आज्ञा नहीं दी; उसने इतना ही संकेत दिया कि ऐसी प्रार्थना से कोई भलाई नहीं होगी।

(8) *अनन्त जीवन का आश्वासन उन लोगों के लिए है, जो अपने आप को मूरतों से दूर रखते हैं।* 1 यूहन्ना की अन्तिम आयत (लगता है बिना संदर्भ के क्योंकि यूहन्ना ने पत्री में मूर्तियों की कोई बात नही की थी[9]) पाठकों को मूर्तिपूजा के विरोध में चेतावनी देती है ''हे बालको, अपने आप को मूरतों से बचाए रखो'' (1 यूहन्ना 5:21)। यूहन्ना ने मूर्तिपूजा का विषय शायद इसलिए जोड़ा क्योंकि वह ''सच्चे परमेश्वर'' की बात कर रहा था। उसने लिखा:

> और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य है, अर्थात उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है (1 यूहन्ना 5:20)।

यूहन्ना ने यीशु के बारे में झूठे शिक्षकों को स्वीकार करने के विरुद्ध चेतावनी दी थी। शायद अब वह यीशु के उस विरोधी विचार को किसी अन्य देवता की पूजा के बराबर बता रहा था।[10] क्योंकि मूर्तिपूजा अर्थात एक सच्चे परमेश्वर को ठुकराना अन्त में पाप है, इसलिए यूहन्ना ने अपनी पत्री की समाप्ति इसके विरुद्ध चेतावनी के साथ की।

मूर्तिपूजा के विरुद्ध चेतावनी हमारे लिए उपयुक्त है। हम मूर्तिपूजा के दोषी हो सकते हैं। यदि हम यीशु को इतना कम मानते हैं कि वह महिमा न दे पाएं जो परमेश्वर की है, तो हम मूर्तिपूजा के दोषी हैं। यदि हम परमेश्वर के आगे किसी भी और चीज़ को देते हैं तो हम इसे मूर्ति बना रहे हैं; फिर यह हमें मूर्तिपूजा का दोषी बना देता है। हो सकता है कि कोई व्यक्ति अहसास किए बिना अपने परिवार को अपने कारोबार को या परमेश्वर के आगे अपने काम को रखते हैं या शौक या मनोरंजन को परमेश्वर से पहल दे सकते हैं। कोई सफलता, भोग विलास, धन या शिक्षा की पूजा कर सकता है।[11] वह पाप में जीवन बिताने के लिए जिससे शैतान और पाप की पूजा करें, परमेश्वर को छोड़ सकता है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जो लोग मूर्तिपूजा के दोषी हैं वे उन लोगों में शामिल *नहीं* हैं, जिन्हें अनन्त जीवन का आश्वासन मिला है।

सारांश

पहले हमने देखा कि यह जानना कितना परेशान करने वाला है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि 1 यूहन्ना के अनुसार मसीही लोगों को यह समस्या नहीं है। इस तथ्य सहित कि हमें अनन्त जीवन मिला है और हम उसका आनंद सदा तक लेंगे यह उससे कहीं बढ़कर है, जितना हम जान सकते हैं। परन्तु हमें उन लोगों में होना चुनना पड़ेगा, जिन्हें अनन्त जीवन का आश्वासन मिला है। वाशिंगटन डीसी में हाल ही के घोटालों में से एक की बात करते हुए एक दैनिक समाचार पत्र की सुर्खी में सवाल पूछा गया, ''किसे मालूम था, कब क्या?'' उस लेख को कहने का उद्देश्य था कि कानून बनाने वालों को, जिन्हें साथी के कारनामों का पहले से पता चला होगा। इस पर बोलना चाहिए था; पत्र का संकेत था कि कुछ न बोलकर वे अपने साथी के साथ दोषी हैं।

''किसे मालूम था, कब क्या?'' अनन्त जीवन की आशा के सम्बन्ध में पूछा जाने वाला अच्छा प्रश्न है। यूहन्ना के समय में किसे मालूम था कि उसे अनन्त जीवन मिला है; और उसे इसका पता चल सकता था।

इस बात को समझें: परमेश्वर का केवल विश्वास योग्य बालक ही जान सकता है कि उसके पास अनन्त जीवन है! यह आश्वासन मसीह में विश्वास के (प्रेरितों 8:22)। अपने पापों का अंगीकार करें (1 यूहन्ना 1:9) और क्षमा के लिए प्रार्थना करें (लूका 11:4क; 1 यूहन्ना 5:16) तो आपको वह आश्वासन फिराने से मिल सकता है।

टिप्पणियां

[1]''अनन्त जीवन'' में यूहन्ना की दिलचस्पी पूरी पुस्तक में स्पष्ट है। यूहन्ना ने यीशु को ''अनन्त जीवन'' से मिलाया (1:2), और उस ने कहा कि ''जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है'' (2:17)। उसने यह भी घोषणा की कि हम से परमेश्वर की प्रतिज्ञा ''अनन्त जीवन'' है (2:25) और चेतावनी दी कि ''किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता'' (3:15)। उसने प्रचार किया कि ''परमेवर ने हमें अनन्त जीवन दिया है: और यह जीवन उसके पुत्र में है'' (5:11)। अन्त में उस ने ''उसके पुत्र यीशु मसीह'' को ''सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन'' (5:20) कहा। [2]देखें गलातियों 5:4; इब्रानियों 6:4-6; 1 कुरिन्थियों 10:12; याकूब 5:19, 20. [3]यूहन्ना ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर की संतान होने का दावा करके हम शांति तभी पा सकते हैं जब हम विश्वासयोग्य मसीही जीवन बिताएं। (देखें 2:29; 3:6; 3:15; 3:19; 5:2; 5:18.) [4]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने कहा, ''अनन्त जीवन'' वाली यूहन्ना की बात वह

'जीवन' है जिसकी गणनात्मक (सदा तक) नहीं, बल्कि गुणात्मक के रूप में की जाए, विश्वासी को जीवन का एक ईश्वरीय नयापन दिया गया जो गुणात्मक रूप में स्वयं परमेश्वर के जीवन से जुड़ा है (2 पतरस 1:4) (जे.डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *दि लैटर ऑफ़ जॉन,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री [आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट पब्लिशिंग कं., 1968], 27) इसके विपरीत, डब मेक्लिश ने तर्क दिया कि मसीही लोगों के पास अनन्त जीवन अब नहीं है, बल्कि अब अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा है (डब मेक्लिश, ''इटरनल लाइफ़ इज़ इन द सन'' *डेनटन* [1987], 246-47)।[5]यदि 1 यूहन्ना 1:1-4 को पुस्तक की ''भूमिका'' समझा जाता है तो 1 यूहन्ना 5:8-21 को इसकी उपसंहार माना जा सकता है। यह वचन इस अर्थ में पूरी पत्री के सारांश का काम करता है कि यह कहता है कि मसीही लोग जान सकते हैं (1) कि परमेश्वर की संतान पाप में बनी नहीं रहती (आयत 18), (2) कि उनकी परमेश्वर के साथ संगीत है (''परमेश्वर के'' हैं; आयत 19) और (3) कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (आयत 20)।[6] यूहन्ना 13 में यूहन्ना ''अपनी पत्री का उद्देश्य व्यक्त करता है कि यह उसके पाठकों को जो उनके पास है उस आश्वासन का पुष्टि करने के लिए है'' (डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एपिस्टल ऑफ़ जॉन: लाइट, लव, लाइफ* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1970], 102)। इस उद्देश्य की तुलना सुसमाचार के यूहन्ना के वृत्तांत उसने लिखा ताकि उसके पाठक विश्वास करें और जीवन पाएं जबकि पत्री उसने इसलिए लिखी ताकि उसके पाठक जाने सकें कि उन्हें अनन्त जीवन मिला है।[7]''हर को जो विश्वास करता है'' (NIV) वर्तमान कृदंत का अनुवाद है, ''वर्तमान काल ... निरन्तर विश्वास का सुझाव देता है'' (स्टिफन एस. स्माले, *यूहन्ना 1, 2, 3* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री [वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1984], 266). [8]मत्ती 7:7-11 से तुलना करें।[9]पुस्तक की अन्तिम आयत में मूर्तिपूजक का उल्लेख हैरान करने वाला है क्योंकि पत्री आम तौर पर उन्हीं विचारों को बार-बार दोहराती और उन पर जोर देती है। यह अजीब और उसकी शैली के विपरीत लगता है कि क्या यूहन्ना को मूर्तिपूजक के विषय की चिंता था, जो उसने पत्री के अन्तिम वाक्य तक उसका उल्लेख नहीं किया।[10]और व्याख्याएं सम्भव हैं। मौरिस वूमैक ने टीकाकारों द्वारा सुझाई गई तीन अन्य व्याख्याओं के साथ, इस व्याख्या को एक सम्भावना के रूप में शामिल किया: ''पहले तो, कइयों का सुझाव है कि यूहन्ना बहुत स्पष्ट बात कर रहा है यानी उसके कहने का केवल इतना अर्थ है कि हम अपने आप को मूरतों से दूर रखें। ... दूसरा, अन्यों का सुझाव है कि यूहन्ना उन झूठी मूर्तियों की बात कर रहा है जो उसके समय के झूठे शिक्षकों ने बना दी थी ... तीसरों, और का यह भी सुझाव है कि यूहन्ना उन धर्मिक परिस्थितियों की बात कर रहा था जो इफिसुस में पाई जाती थी। ... चौथा, कुछ लोगों का मानना है कि यूहन्ना किसी भी ऐसी चीज़ की बात कर रहा होगा। जो परमेश्वर और मनुष्य के बीच में आ सकती थी'' (मौरिस वॉमैक ''कीप योरसेल्फ फ्रॉम आइडल,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* [नवंबर 1985]: 21-22)। यीशु के बारे में विरोधी विचारों को मूर्तिपूजकों के विरोध में यूहन्ना की चेतावनी से मिलाने वाले टीकाकरों में थॉमस एफ़. जॉनसन, *यूहन्ना 1, 2, 3* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाच्युएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 141 एंड जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि एपिस्टल ऑफ़ जॉन,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 197.

[11]वॉमैक, 22-23.